'' सत्र 2013-14 में जिले में संचालित सी.सी.ई. विद्यालयों की उपलब्धियों की प्रभावशीलता एवं अध्ययन''

अनुसंधान-प्रतिवेदन

2015-16

संरक्षक :
प्रधानाचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
जोधपुर

प्रस्तुतकर्ता:
नवनीत कुमार
वरिष्ठ व्याख्याता एवं प्रभागाध्यक्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जोधपुर

प्रभागाध्यक्ष : शिक्षाक्रम अधिगम सामग्री निर्माण विकास एवं मूल्यांकन प्रभाग
(C.M.D.E. प्रभाग)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, विद्याशाला, जोधपुर

आभार प्रद□ान

विद्यालय समुन्नयन एवं ि ाक्षा में गुणात्मक सुधार दृश्टि से प्रभावी क्षेत्र में जांच और परीक्षा के स्थान पर वर्तमान में मापन एवं मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है विभागीय नियमानुसार, अपेक्षानुसार एवं निर्दे ाानुसार सत्र पर्यन्त विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक पक्ष का मापन किया जाता है। ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के मापन हेतु मुल्यांकन प्रक्रिया में योजना के अनुसार परीवीक्षण करते हुवे, समाधानात्मक सुझाव द्वारा ि ाक्षा में गुणात्मक सुधार लाने का प्रयास करते है।

भाोधकर्ता ने डाईट के अकादमिक अधिकारी के रूप में प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण कर जानकारीया प्राप्त की। वे विभागीय अपेक्षानुसार मापन एवं मूल्यांकन कार्य का परीवीक्षण कर उसमें आने वाली कठिनाईयाँ के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जिसमें प्राथमिक ि ाक्षा स्तर के विद्यार्थियों में गुणात्मक उन्नयन हो सकेगा।

इस कार्य को पूर्ण करने में श्री इन्द्रचन्द कोठरी सेवानिवृत्ति वरिश्ठ व्याख्याता ने अपना अमूल्य मार्गद ान प्रदान किया जिसके लिये में हार्दिक रूप से इनका आभारी हूँ।

संस्थान के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण, प्रधानाध्यापकगण एवं अपने संस्था परिवार के सदस्यों का जिनके सहयोग व प्रेरणा से में इस भाीघ्र कार्य को पूर्ण कर सका। उनका बहुत–बहुत साधुवाद।

नवनीत कुमार
प्रभागाध्यक्ष व वरिश्ठ व्याख्याता डाईट, जोधपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	शोध शीर्षक	3
2.	आवश्यकता	3
3.	शोध का औचित्य	3
4.	उद्देश्य	4
5.	परिकल्पना	4
6.	परीसीमन	4
7.	न्यादर्श	5
8.	अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली	5
9.	शोध उपकरण	6
10.	शोध विधि	7
11.	सांख्यिकी	7
12.	सांख्यिकी विश्लेषण व निष्कर्ष	7
13.	सुझाव, शैक्षिक उपादेयता	18
14.	सन्दर्भ ग्रंथ	19
15.	प्रयुक्त उपकरण	19
16.	न्यादर्श सूची	20

1. भाोध का भीर्शक–

सत्र 13–14 में जिले में संचालित सी.सी.ई. विद्यालयों की उपलब्धियों थी प्रभाव ीलता एवं अध्ययन

2. प्रयोजन की आव□यकता–

ि ाक्षा के क्षेत्र में जांच और परीक्षा के स्थान पर वर्तमान में मापन एवं मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है। अध्ययन क्रियाओं द्वारा छात्रों के मनो ाारीरिक पक्षों का विकास अध्ययन क्रियाओं द्वारा छात्रों के मनो ाारीरिक पक्षों का विकास किया जाता है निश्पति या उपलब्धि परीक्षणों द्वारा विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक पक्ष का मापन किया जाता है परन्तु उनके भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों के विकास मापन कठिन होता है। इन दोनों पक्षों के मापन हेतु मूल्यांकन प्रक्रिया का मापन कठिन होता है। इन दोनों पक्षों के मापन हेतु मूल्याकंन प्रक्रिया अधिक उपयोगी है। मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है तथा इसके द्वारा परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों ही पक्षों के बारे में सूचनाओं प्राप्त होती है। इस प्रकार की ि ाक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का वि ोश महत्व है।

विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन कि सीमा तक हो पाया, उनका स्तर क्या रहा ि ाक्षा के उद्दे यों की प्रति तथा सम्पूर्ण व्यक्तिगत के निर्माण की जाँच में कहाँ पर कमी है इसकी निदानात्मक करके उसका उपचारात्मक परीक्षण से कठिनाई को प्रचलित परीक्षाओं की अपेक्षा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की आव यकता हुई।

3. औचित्य–

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का औचित्य इस प्रकार कहा जा सकता है

– इसमें सीखने का अधिकतम अवसर मिलेगा।

– इसमें पारदर्ि ाता झलकेगी।

– स्वयं की कमजोरियों को पहचान कर क्षमताओं के विकास का कौ ाल उत्पन्न होगा।

– अर्जित दक्षताओं को उन्हें इस विद्या द्वारा पहचान कर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जा सकेगा।

4. उद्दे य–

1. बच्चे ने कितना तथा किस स्तर पर ज्ञानार्जन किया है
2. इसकी जांच करना। बच्चें की व्यक्तिगत जरूरतों और वि ोश आव यकताओं को पहिचानना।
3. उपर्युक्त ि ाक्षण का वातावरण तैयार करना।
4. बच्चों को सीखने की प्रक्रिया, रूचि कठिनाईयों को पहिचान कर उसके अनुरूप बच्चों की सहायता करना।,
5. बच्चों में आत्मवि वास, आत्मसम्मान, व उपलब्धि का भाव जागृत करना।

5. परिकल्पना–

जिले में संचालित सी.सी.ई. विद्यालय की उपलब्धियों प्रभाव ाील हैं।

6. परिसीमन–

जोधपुर जिले के भोपालगढ़, जोधपुर भाहर व लूनी पंचायत समिति तक सीमित है

7. न्याद□ा

न्याद ाचयन विधि – यार्दृच्छिक विधि

न्याद ा चयन का आधार – सामान्य दक्षता वाले विद्यार्थी

न्याद□ा का आकार–

कक्षा – 3 से 5 तक

कुल विद्यालय – 15

विद्यालय – 6*15 = 90 विद्यार्थी

अध्यापक – 15

प्रधानाध्यापक – 15

8. अध्ययन में प्रयुक्त भाब्दावली

सतत और व्यापक मूल्यांकन मे चार महत्वपूर्ण पद है सतत्ता, व्यापकता, आकलन, मूल्यांकन।

सतत्ता–

लगातार अथवा निरन्तर कक्षा ि ाक्षण व मूल्यांकन दोनों से है। जो साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। यह ि ाक्षण के दौरान सतत् अवलोकनों और उन पर आधरित समीक्षा तथा ि ाक्षण योजना में निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया है।

व्यापकता–

सामान्यतः ि ाक्षक उसी विशय वस्तु का ि ाक्षण करवा पाते जिसका मूल्यांकन करना होता है। इसके लिए जरूरी हो जाता है कि विद्यालय के कक्षा

के भीतर और बाहर होने वाली सभी गतिविधियों की मूल्यांकन में भाामिल किया जायें जिसमें बालक की मूल्यांकन में भाामिल किया जायें जिसमे बालक की भागीदारी होती है व्यापकता बालक को उपलब्ध कराए जाने वाले अवसरों विशयगत अनुभवों मूल्याकनों के क्षेत्रों व तरीकों सभी में देखी जाती है।

आंकलन–

यह मूल्यांकन प्रक्रिया का हिस्सा है एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आकलन छोटे–छोटे उद्दे यों के लिये किया जाता है

मूल्यांकन–

जो बच्चे के सीखने – सिखाने की प्रक्रिया के साथ–साथ निरन्तर चलती हैं।

- मूल्यांकन यह पता लगाती है कि अपेक्षित दक्षताऐ किस सीमा तक विकसित हुई है, और उनके विकसित करने की प्रक्रिया में कहां बदलाव की आव यकता है।
- मूल्यांकन प्रक्रिया से ि ाक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति के साथ ही बालक के ज्ञान कौ ालों, योग्यता की विकास हो तथा मूल्यांकन में क्रियाकलापों और खोज का समावे ा है।

मनो□ारीरिक–

ज्ञानात्मक, भावात्मक, और क्रियात्मक पक्षों के विकास है।

9. भाोध उपकरण –

1. विद्यार्थियों हेतु साक्षात्कार अनुसूची

2. प्रधानाध्यापक हेतु प्र नावाली
3. अध्यापक हेतु प्र नावली
4. अन्वेशक हेतु अवलोकन प्रपत्र

10. विधि– प्र नावली सम्बन्धित से भरवाकर वि लेशण करना।

11. प्रयुक्त सोरिब्यकी– ''प्रतिशत''

सांख्यिकी विश्लेषण निष्कर्ष–

A. विद्यार्थियों हेतु–

1. जब बालक प्रथम बार विद्यालय में प्रवेश लेता हैं तो 92 प्रतिशत विद्यार्थी का मत है कि प्रवे ा के पन्द्रह दिन बाद प्रवेश परीक्षा ली जाती है जबकि शेष 8 प्रतिशत की कोई परीक्षा नहीं ली गई।
2. इन परीक्षा का आयोजन जुलाई माह में होता है तब तक पूर्व कक्षा की विषय सामग्री को दोहराया जाता हैं।
3. क्रमोन्नति पश्चात् कक्षा में शिक्षक प्रारम्भ में पूर्व स्तर निर्धारण हेतु परीक्षा ली जाती। ऐसा विद्यार्थियों का मत हैं।
4. नवीन कक्षा का शिक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों को समूह में बाँटा जाता हैं। जो शिक्षक द्वारा स्वंय के विवेक से समूह का निर्धारण करते है। ऐसा विद्यार्थियों का अभिमत है।
5. ये समूह विषय वार अलग-अलग होते हैं जो सत्र पर्यन्त प्रगति के साथ बदलते हैं ऐसी बात विद्यार्थियों ने बताया।
6. शिक्षक द्वारा कक्षा में ि ाक्षण समूह बार कराने के प चात् मौखिक एवं लिखित परीक्षा द्वारा हमारे अधिगम स्तर की जाँच कराने में भात् प्रति ात विद्यार्थियों का अभिमत हैं।

7. यदि छात्र अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं करते हैं तो विद्यार्थियों हेतु ि ाक्षक द्वारा उपचारात्मक ि ाक्षण दो बार कराया जाता है। जिसका आयोजन विद्यालय प्रारम्भ होने से पूर्व किया जाता हैं ऐसा विद्यार्थियों ने बताया है जिसमें सहपाठी ि ाक्षक में हमे ाा एक दूसरे की सहायता करते हैं।
8. अधिकतर छात्रों ने ये बताया कि उनके अधिगम स्तर की जानकारी अभिभावकों को कभी-कभी दी जाती है ऐसा 70 प्रति ात छात्रों की राय जबकि 10 प्रति ात छात्रों ने बताया कि जानकारी हमे ाा दी जाती है। भोष छात्रों की राय है कि जानकारी कभी वहीं दी जाती हैं।
9. 80% छात्रों की राय है कि उपचारात्मक ि ाक्षण के प चात् लिखित परीक्षा द्वारा पुनः मूल्यांकन किया जाता हैं भोष 20% छात्रों की राय है मौखिक परीक्षा द्वारा भी सम्बोधन किया जाता हैं।
10. सभी विद्यार्थियों का एक ही मत है कि क्रियात्मक कार्यों को संकलित करके एवं पोर्टफोलियों तैयार किया जाता हैं।
11. भात् प्रति ात् विद्यार्थियों की राय है कि योगात्मक मूल्यांकन के प चात् उनके अधिगम स्तर की जानकारी अभिभावकों को बैठक में की जाती हैं।
12. अभिभावकों द्वारा दी गई टिप्पणी को ि ाक्षक पंजिका में अंकित कर उनकी चर्चा की जाती हैं। ऐसा 90 प्रति ात विद्यार्थियों ने बताया। और उस चर्चा को ि ाक्षक अपनी डायरी में नोट करते है।
13. योगात्मक मूल्यांकन के समय निम्नलिखित क्षेत्रों का भी मूल्यांकन किया जाता हैं।

    1 चित्रण 2 पेंटिंग 3 भाषण 4 कविता 5 नृत्य 6 गायन 7 खेल 8 पी.टी ऐसी भात् प्रति ात गतिविधियों द्वारा मूल्यांकन किया जाता हैं ऐसा विद्यार्थियों ने बताया। साथ में संवेगात्मक कौ ाल, एवं विद्यालय के कार्यक्रमों का भी मूल्यांकन किया जाता हैं।

14.इन उपरोक्त सभी का मूल्यांकन गतिविधि की समाप्ति पर किया जाता हैं ऐसा विद्यार्थियों का अभिमत हैं।

15.छात्रों का ऐसा मानना है कि ि ाक्षा द्वारा मूल्यांकन निम्न गतिविधियों का मूल्यांकनप किया जाता हैं।

अ. व्यक्तिगत कार्य के दौरान-ि ाक्षण के समय, प्रार्थना सभा में, बाल सभा में

ब. सामूहिक कार्य के दौरान- क्रियात्मक कार्य, भौक्षणिक भ्रमण व अभिकरण अवलोकन में।

16.सी.सी.ई व्यवस्था के प्रति विद्यार्थियों का अनुमत रहा कि पढ़ाई अच्छी ढंग से होती है एवं क्रियात्मक कार्य भी कराये जाते हैं।

B. अध्यापकों हेतु सांख्यिकी वि□लेषण व निष्कर्ष–

1. 80 प्रति ात अध्यापकों का कहना है कि उन्होनें सी.सी.ई का प्रि ाषण दो बार एस.एस.ए के माध्यम से प्राप्त किया जबकि 20 प्रतिशत अध्यापक दो से अधिक बार एस.एस.ए माध्यम से ही प्राप्त किया।
2. भात् प्रति ात अध्यापकों का मानना है कि आधार रेखा प्रवेश के पन्द्रह दिन बाद में लेते हैं, परीक्षा से पूर्व कक्षा की विषय सामग्री को एक सप्ताह तक दोहराया जाता हैं।
3. क्रमोन्नति के प चात् नवीन कक्षा में ि ाक्षक से पूर्व स्तर निर्धारण के लिये अध्यापकों द्वारा परीक्षा ली जाती हैं ऐसा 90 प्रति ात अध्यापक का मानना हैं।
4. नवीन ि ाक्षण कराने के पूर्व विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर समूह का निर्धारण किया जाता है जिसका आधार पूर्व कक्षा के प्राप्तांक रखा जाता हैं। ऐसा 92 प्रति ात अध्यापकों का मानना हैं।

5. ये समूह विषयवार बनाये जाते है जो सत्र पर्यन्त प्रगति के साथ बदलते हैं ऐसा भात् प्रति ात अध्यापक का मानना है जो विद्यार्थियों के समूह सभी विषयों हेतु उपसमूह का निर्धारण होता हैं।

6. पाठ की समाप्ति पर विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की जाँच निम्न साधनों से की जाती हैं।

A. मौखिक परीक्षा B. लिखित परीक्षा C. क्रियात्मक कार्य द्वारा D. पोर्टफोलियों से संकलित कार्य द्वारा E. कार्य द्वारा।

ऐसा 82 प्रति ात अध्यापकों का मानना हैं।

7. जब विद्यार्थी अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं करते हैं उनका कभी-कभी उपचारात्मक ि ाक्षण 60 प्रति ात अध्यापक विद्यालय प्रारम्भ से होने से पूर्व कराया जाता हैं। जबकि 32 प्रति ात अध्यापक छुट्टी के बाद उपचारात्मक ि ाक्षण करवाते हैं।

8. अध्यापकों का भात् प्रति ात् मानना है कि विद्यार्थी अपने सहपाठी की सहायता भी उपचारात्मक ि ाक्षण में कभी कभी लेते हैं।

9. अध्यापक अपनी सुविधानुसार उपचारात्मक ि ाक्षण का आयोजन करते है और विद्यार्थी के अधिगम स्तर की जानकारी उनके अभिभावकों को 91 प्रति ात हमे ाा देते हैं जबकि 9 प्रति ात कभी-कभी देते हैं।

10. अध्यापकों का अभिमत (86 प्रति ात) है कि उपचारात्मक ि ाक्षण के बाद ि ाक्षक अपने सुविधानुसार पुनः मूल्यांकन करते हैं।

उनके लिये निम्न साधन काम में लेते हैं।

A. मौखिक परीक्षा B. लिखित परीक्षा C. क्रियात्मक कार्य द्वारा D. अभ्यास कार्य (कक्षा एवं गृह कार्य) E. लिखित कार्य नोट बुक द्वारा F पोर्टफोलियों में संकलित कार्य द्वारा

जबकि 14 प्रति ात अध्यापक क्रियात्मक कार्यों को संकलित करके एक पंजिका में कभी-कभी एकत्रित करते हैं।

11. इस पोर्टफालियों की जानकारी अभिभावकों की मात्र 13 प्रति ात अध्यापक देते हैं।

12. योगात्मक मूल्यांकन के समय निम्नलिखित क्षेत्रों द्वारा किया जाता हैं।

A. **कला वर्ग-** चित्रण, पेंटिंग भाषण,कविता, रचनात्मक लेखन गायन, अभिनय आदि।

B. **स्वास्थ्य एवं भाारिरिक ि◌ाक्षा-** खेल, पीटी, योगात्मक स्वच्छता।

C. **व्यक्तिगत गुण-**संवेगात्मक, सामाजिक कौ ाल।

D. **अभिवृत्ति-**ि ाक्षक के प्रति, पर्यावरण के प्रति, विद्यालय के कार्यक्रमों के प्रति, सहपाठियों के प्रति

ऐसा भात् प्रति ात अध्यापकों का मानना हैं। तत् प चात् गतिविधियों की समाप्ति पर मूल्यांकन किया जाता हैं।

विद्यार्थियों का मूल्यांकन गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य के दौरान 95 प्रति ात अध्यापक स्वंय करते है।

13. 88 प्रति ात अध्यापक सी.सी.ई व्यवस्था के अन्तर्गत मूल्यांकन करते समय निम्न समस्या अनुभव करते हैं–

A. कक्षा स्तर में वर्गीकरण का ठोस आधार न होना।

B. अनियमितता बच्चों की होना।

C. पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु गतिविधियों के अनुरूप न होना।

D. गैर भौक्षणिक गतिविधियों का पाठ्यक्रम में उचित स्थान न होना।

E. S.A. परखों की नि ाचत समय अवधि न होना।

14. सी.सी.ई व्यवस्था के अन्तर्गत मूल्यांकन को प्रभावी बनाने हेतु अध्यापकगणों ने प्रमुख सुझाव निम्न प्रकार से बताएँ-

A. S.A परखने हेतु समयावधि विषयानुसार तय की जाये।

B. वार्षिक प्रगति अभिलेख में चैकलिस्ट का उचित स्थान दिया जायें।

C. साप्ताहिक समीक्षा में विकल्पात्मक बिन्दुओं का समावे ा किया जायें।

D. बच्चों को ग्रेड तथा कक्षा स्तर देने हेतु ठोस आधार एवं उचित दि ाा निर्दे ा दिये जायें।

E. बच्चों की प्रगति आंकलन में अंक पद्धति के आधार पर ग्रेड निर्धारण की व्यवस्था रखी जायें।

C. प्रधानाध्यापक सांख्यिकी एवं निष्कर्ष–

1. 30 प्रति ात ने सी.सी.ई प्रि ाक्षण प्राप्त नहीं किया जब कि 70 प्रति ात ने सी.सी.ई प्रि ाक्षण प्राप्त किया जो एस.एस.ए के माध्यम से प्राप्त किया।
2. 60 प्रति ात ि ाक्षकों ने दो या दो से अधिक बार प्रि ाक्षण प्राप्त एस. एस.ए के उपक्रम से प्राप्त किया। जबकि 40 प्रति ात ि ाक्षक अभी भी किसी भी उपक्रम से प्रि ाक्षण प्राप्त नहीं किया।
3. 20 प्रति ात आधार रेखा (प्रवे ा परीक्षा) ि ाक्षकों द्वारा नहीं ली गई। 80 प्रति ात ि ाक्षकों द्वारा प्रवे ा परीक्षा ली गई।
4. ि ाक्षकों द्वारा पूर्व प्रवे ा परीक्षा के पहले 10 प्रति ात ि ाक्षकों ने विषय सामग्री दोहराई नहीं गई। भोष 90 प्रति ात अपनी सुविधा के अनुसार परीक्षा का आयोजन करते है। ऐसा संस्था प्रधान का मत हैं।

5. क्रमोन्नति प चात् नवीन कक्षा में ि ाक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व स्तर निर्धारण हेतु 25 प्रति ात अध्यापक परीक्षा नहीं लेते। जबकि 75 परीक्षा लेते हैं।
6. नवीन कक्षा का ि ाक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व कक्षा के प्राप्तांकों के आधार लेकर समूह बनाए जाते हैं। ऐसा भात् प्रति ात संस्था प्रधानों को मत हैं।
7. विद्यार्थियों के समूह ि ाक्षकगण विषयवार बनाते है। एवं सत्र पर्यन्त प्रगति के साथ बदलते रहते हैं जो भात् प्रति ात संस्था प्रधानों ने राय प्रस्तुत की।
8. ि ाक्षक द्वारा कक्षा में ि ाक्षण समूहवार कराया जाता है। तथा पाठ की समाप्ति पर निम्न साधनों से विद्यार्थी का अधिगम स्तर की जाँच करते हैं ऐसी 8 प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया।
    A. मौखिक परीक्षा द्वारा
    B. लिखित परीक्षा द्वारा
    C. इकाई द्वारा
    D. लिखित कार्य नोट बुक द्वारा
    E. क्रियात्मक कार्य द्वारा
    F. अभ्यास कार्य (कक्षा एवं गृह कार्य)
    G. पोर्टफोलियों से संकलित कार्य द्वारा।
9. अधिगम स्तर तक प्राप्त नहीं करने वाले विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक ि ाक्षण हमे ाा कराया जाता है ऐसा 78 प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया।

10. संस्था प्रधानों ने भात् प्रति ात् बताया कि विद्यालय प्रारम्भ होने से पूर्व उपचारात्मक ि ाक्षण होने से पूर्व सभी विषयाध्यापक प्रति दिन अपने विषयों का अध्ययन कराते हैं।

11. संस्था प्रधानों के अनुसार ये उपचारात्मक ि ाक्षण समय विभाग चक्र बनाकर करवाया जाता हैं।

12. 85 प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया कि उपचारात्मक ि ाक्षण में विद्यार्थियों की सहपाठी छात्र की सहायता हमे ाा ली जाती है तथा उसके अधिगम स्तर की जानकारी कभी-कभी उनके अभिभावकों को दी जाती हैं।

13. 92 प्रति ात संस्था प्रधानों ने दावा किया कि उपचारात्मक ि ाक्षण प चात् विद्यार्थियों का पुनः मूल्यांकन ि ाक्षण की सुविधा अनुसार किया जाता हैं।

14. पुनः मूल्यांकन हेतु निम्न साधनों से अधिगम स्तर की जाँच करते हैं-

    A. मौखिक परीक्षा

    B. लिखित परीक्षा

    C. लिखित कार्य द्वारा

    D. क्रियात्मक कार्य द्वारा

    E. अभ्यास कार्य (कक्षा एवं गृह कार्य)

    F. पोर्टफोलियों में संकलित कार्य द्वारा

15. भात् प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया कि क्रियात्मक कार्यों को संकलित कर हमे ाा एक पंजिका संग्रहित करते हैं।

16. योगात्मक मूल्यांकन के सभी क्षेत्रों का मूल्यांकन कभी-कभी किया जाता है ऐसा 60 प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया।

17. योगात्मक मूल्यांकन के समय निम्न क्षेत्रों का भी मूल्यांकन किया जाता हैं।

18. कभी किया जाता है ऐसा 60 प्रति ात संस्था प्रधानों ने बताया।

19. योगात्मक मूल्यांकन के समय निम्न क्षेत्रों का भी मूल्यांकन किया जाता हैं।

A. **कला ि◌ाक्षा-** चित्रण, पेंटिंग, भाषण, कविता, नृत्य, गायन

B. **स्वास्थ्य एवं भाारीरीक ि◌ाक्षा-** खेल, पीटी, योगाभ्यास, ाारीरीक स्वच्छता

C. **व्यक्तिगत गुण-** संवेगात्मक कौ ाल, चिन्तन कौ ाल, सामाजिक कौ ाल

D. **अभिवृत्ति-** ि ाक्षक के प्रति,सहपाठियों के प्रति, पर्यावरण के प्रति, विद्यालय कार्यक्रमों के प्रति

20. ि ाक्षक द्वारा मूल्यांकन का समयान्तराल इकाई की समाप्ति पर रखा जाता हैं। ऐसा संस्था प्रधानों का दावा हैं।

21. ि ाक्षक द्वारा जिन गतिविधियों के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता हैं ऐसा भात् प्रति ात संस्था प्रधानों ने दावा किया-

A. ि ाक्षण के समय

B. क्रियात्मक कार्य

C. प्रार्थना सभा

D. बाल सभा

E. भौक्षिक भ्रमण

22. सी.सी.ई व्यवस्था के अन्तर्गत मूल्यांकन करते समय निम्नांकित समस्या अनुभव की-

A. भौतिक संसाधन की कमी

B. विषयाध्यापक की कमी

C. सतत् मूल्यांकन का प्रि ाक्षण

23. सी.सी.ई व्यवस्था के अन्तर्गत मूल्यांकन को प्रभावी बनाने हेतु निम्नांकित सुझाव दिये।

A. पर्याप्त अध्यापक उपलब्ध हो।

B. भौतिक संसाधन उपलब्ध हो।

D. अन्वेषक सांख्यिकी एवं निष्कर्ष–

1. 90 प्रति ात प्रधानाध्यापक ने सी.सी.ई प्रि ाक्षण दो या दो से अधिक बार प्रि ाक्षण प्राप्त किया। भोष 10 प्रति ात प्रधानाध्यापक प्रि ाक्षण प्राप्त नहीं किया।
2. ये संस्था प्रधान एस.एस.ए. से प्रि ाक्षण प्राप्त किया है।
3. संस्था प्रधानों ने दावा किया कि उनके ि ाक्षक एस.एस.ए प्रि ाक्षण दो तीन बार प्राप्त किया।
4. अन्वेषक ने विद्यालय अभिलेख के आधार निम्न निष्कर्ष पर पहुँचे-
   A. आधार रेखा मूल्यांकन से पूर्व परीक्षा का आयोजन प्रवे ा के बाद एक सप्ताह तक किया जाता हैं।
   B. आधार रेखा मूल्यांकन तिथि 15 जुलाई तक रखी जाती है।
   C. भात् प्रति ात विद्यालयों में क्रमोन्नति प चात् नवीन कक्षा हेतु परीक्षा ली जाती हैं।
   D. नवीन कक्षा को ि ाक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व समूह का निर्धारण कर ि ाक्षण कराया जाता है तथा विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की जाँच अभिभावकों द्वारा दी गई टिप्पणी को पंजिका में अंकित करते हैं तथा योगात्मक मूल्यांकन भी हमे ाा किया जाता हैं।

5. पाठ की समाप्ति पर ि ाक्षक जिन साधनों से अधिगम स्तर की जाँच अभिलेख एवं अवलोकन के समय पर की जाती है जिनका मूल्यांकन का आधार इस प्रकार पाया गया-

   A. मौखिक परीक्षा

   B. लिखित परीक्षा

   C. इकाई परख

   D. प्रोजेक्ट द्वारा

   E. कार्य पत्रक

   F. प्रायोगिक कार्य

   G. लिखित कार्य

   H. क्रियात्मक कार्य

   I. अभ्यास कार्य (कक्षा एवं गृह कार्य)

   J. पोर्टफोलियों द्वारा

6. अन्वेषकों द्वारा रिकॉर्ड से जाँचा गया कि अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं करने वाले विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक ि ाक्षण व्यवस्था की जांच की जो इस प्रकार पाया गया-

   A. उपचारात्मक ि ाक्षण कभी-कभी करवाया जाता हैं।

   B. किन्हीं विद्यालयों में छुट्टी के बाद विद्यालय प्रारम्भ से पूर्व आयोजित किया जाता हैं।

   C. उपचारात्मक ि ाक्षण की व्यवस्था सभी विषयों की समय विभाग चक्र बना कर की जाती हैं।

   D. उपचारात्मक ि ाक्षण के प चात् पुनः मूल्यांकन किया जाता है।

   E. उपचारात्मक ि ाक्षण में ि ाक्षक सहपाठी छात्र की सहायता लेतें हैं।

F. पुनः मूल्यांकन के प चात् पुनः बिन्दु संख्या 5 के अनुसार अधिगम स्तर की जाँच करते हैं।

7. योगात्मक मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों के मूल्यांकन की स्थिति भी जाँची गई जो कला ि ाक्षा, साहित्य क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र, स्वास्थ्य एवं भाारीरीक ि ाक्षा, व्यक्ति गुण अभिवृत्तियाँ का सन्तोष जनक मूल्यांकन होता हैं।
8. विद्यार्थियों की जिन गतिविधियों का ि ाक्षकों के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। इसके लिए अन्वेषकों ने

1. अवलोकन दिवस 2. अभिलेख के आधार पर

विभिन्न आयामों के मूल्यांकन को जाँचा। व सन्तोषजनक पाया।

भावी भाोध हेतु सुझाव–

इस भाोध को पूर्ण करने के प चात् कई तथ्य सामने आए जिन पर और अध्ययन किया जा सकता है। प्राप्त तथ्यों एवं निष्कर्षों के आधार पर भावी भाोध हेतु निम्नवर्ती सुझाव प्रस्तावित हैं-

1. विद्यालय विभिन्नता के आधार पर पब्लिक स्कूल,आद ा विद्यालय,ईसाई मि ानरी मदरसा आदि के संस्था प्रधान अध्यापकों के ि ाक्षण कार्य की उपलब्धियों पर भी भाोध कार्य किया जा सकता हैं।
2. भाहरी-ग्रामीण, प्राथमिक ि ाक्षा में अध्ययनरत बालक-बालिका की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।
3. बड़े न्याद ा पर भी यह भाोध कार्य किया जा सकता हैं।
4. अर्जित दक्षताओं के, स्वंय की कमजोरियों को पहचान कर क्षमताओं के विकास का कौ ाल उत्पन्न किया जा सकता हैं।

5. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से सीखने का अधिकतम अवसर मिलने से उसमें पारदि ाता झलक सकती है।

भौक्षिक उपादेयता–

कोई भी भाोध तभी सार्थक है जब उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों की उपलब्धियों की प्रभाव ीलता उपयोगी होगी। इस भाोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम ि ाक्षा नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है तथा ि ाक्षा जगत का प्रारम्भिक विभिन्न समस्याओं को समाधान का मार्ग प्र ास्त कर सकते हैं। प्रस्तुत भाोध निम्नानुसार उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

1. नवीन ि ाक्षाक्रम के अनुसार प्रधानाध्यापक, अध्यापक में विकसित इस कौ ाल का सकारात्मक प्रभाव ि ाक्षकों के ि ाक्षण कार्य, लिखित जाँच कार्य के साथ-साथ मापन एवं मूल्यांकन पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।
2. प्राथमिक विद्यालय में ि ाक्षा का वातावरण बनेगा एवं संस्था प्रधान, ि ाखर एवं विद्यार्थियों के मध्य एक पारिवारिक सेतु का निर्माण होगा।
3. ि ाक्षा में गुणात्मक उन्नयन होगा।
4. मापन एवं मूल्यांकन योजनाओं न केवल ि ाक्षण कार्य सुदृढ़ होगा। विद्यालय के विद्यार्थियों में विकासात्मक प्रगति होगी।

संदर्भ ग्रंथ–

1. Cotinious and comprechensive education, manual for teachers C.B.S.E Delhi
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्त्रोत राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर।

3. सतत एवं मूल्यांकन, शिक्षण संदर्शिला C.B.S.E. प्रीतविहार, Delhi

4. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या– रूपरेखा NCERT

न्याद□ा की सूची–

1. रा. मा. वि. दाड़मी पंचायत समिति भोपालगढ़
2. रा. मा. वि. गुर्जरों की ढाणी पंचायत समिति भोपालगढ.
3. रा. मा. वि. रजलानी प स भोपालगढ़
4. रा. उ. मा. वि. आसोप प स भोपालगढ़
5. रा. बा. उ. प्रा. वि. आसोप प स भोपालगढ़
6. रा. उ. प्रा. वि. पिपलिया नाडा प च भोपालगढ़
7. रा. प्रा. वि. राज थुरिया भोपालगढ़
8. रा. प्रा. वि. गोदारों की ढाणी कांकाणी प स लूनी
9. रा. प्रा. वि. सांगरिया (लूनी)
10. रा. उ. प्रा. वि. भाण्डूकला (लूनी)
11. रा. उ. प्रा. वि. कांकाणी (लूनी)
12. रा. उ. प्रा. वि. भगत की कोठी (जोधपुर)
13. रा. बा. उ. प्रा. वि भगत की कोठी (जोधपुर)
14. रा. उ. प्रा. वि. बलदेवनगर जोधपुर
15. रा. उ. प्रा. वि. सरदारपुरा सूंथला जोधपुर